सन्देश संख्या ६४

(सन्देश संख्या ६३ से क्रमशः)

'अनाम–अस्तित्व' के सहस्रनाम (क्रमशः)

छन्द संख्या – ६३ (दस नाम)

१.	शुभाङ्ग	:	मंगलमूर्ति (५८६)
२.	शान्तिद	:	शान्तिप्रदाता (५८७)
३.	स्रा	:	सर्जनात्मक शाश्वतत्व (५८८)
४.	कुमुद	:	पूर्ण चन्द्र सदृश (५८९)
५.	कुवलेशय	:	महासागर (चैतन्य के) में विश्राम (५९०)
६.	गोहित	:	सद्भावपूर्ण उपकारक (५९१)
७.	गोपति	:	प्रकाश का स्वामी (५९२)
८.	गोप्ता	:	प्रच्छन्न ज्योति (५९३)
९.	वृषभाक्ष	:	सदाचार के नेत्र(५९४)
१०.	वृषप्रिय	:	सदाचार का प्रेम (५९५)

छन्द संख्या – ६४ (नौ नाम)

१.	अनिवर्ती	:	कभी पीछे न हटने वाले (५९६)
२.	निवृत्तात्मा	:	निर्लिप्तता का सार (५९७)
३.	संक्षेप्ता	:	सुस्पता (५९८)
४.	क्षेमकृत्	:	संरक्षण (५९९)
५.	शिव	:	अन्तर्लयन (६००)
६.	श्रीवत्सवक्षा	:	वक्षस्थल (अर्थात् हृदय) में पवित्र प्रेम (६०१)
७.	श्रीवास	:	पवित्रता में जीने वाले (६०२)
८.	श्रीपति	:	पवित्रता का स्वामी (६०३)
९.	श्रीमतां वर	:	पवित्रता का वरदान (६०४)

छन्द संख्या – ६५ (दस नाम)

१.	श्रीद	:	पवित्रता प्रदान करने वाले (६०५)
२.	श्रीश	:	पवित्रता में स्थित (६०६)
३.	श्रीनिवास	:	पवित्रता में निवास करने वाले (६०७)
४.	श्रीनिधि	:	पवित्रता की निधि (६०८)
५.	श्रीविभावन	:	अत्यन्त पवित्र भाव (६०९)
६.	श्रीधर	:	पवित्रता धारण करने वाले (६१०)
७.	श्रीकर	:	पवित्रता को बढ़ाने वाले (६११)
८.	श्रेय	:	पवित्रता को पसन्द करने वाले (६१२)
९.	श्रीमान्	:	पवित्रता को पहनने वाले (६१३)
१०.	लोकत्रयाश्रय	:	तीनों लोकों का आश्रय (६१४)

छन्द संख्या – ६६ (नौ नाम)

१.	स्वक्ष	:	आत्मावलोकन (६१५)
२.	स्वङ्ग	:	आत्मधारण (६१६)
३.	शतानन्द	:	सौगुना आनन्द (६१७)
४.	नन्दि	:	स्वतःस्फूर्त परमानन्द (६१८)
५.	ज्योतिर्गणेश्वर	:	प्रकाश पुञ्ज का उद्गम (६१९)
६.	विजितात्मा	:	अपराजेय (६२०)
७.	अविधेयात्मा	:	अनुशासित करने वाले (६२१)
८.	सत्कीर्ति	:	उत्पन्न कार्य–सम्पादन (६२२)
९.	छिन्नसंशय	:	सभी शंकाओं का निर्मूलन (६२३)

छन्द संख्या – ६७ (नौ नाम)

१.	उदीर्ण	:	सुकोमल धारक (६२४)
२.	सर्वतश्चक्षु	:	सर्वत्र अवलोकन (६२५)
३.	अनीश	:	सर्वश्रेष्ठ (६२६)
४.	शाश्वतस्थिर	:	असीम प्रशान्ति (६२७)

५. भूशय : लेटे हुए (विश्राम करते हुए) अर्थात् अकर्ता (६२८)
६. भूषण : आलंकारिक (६२९)
७. भूति : अतीत से मुक्ति (६३०)
८. विशोक : शोकरहितता (६३१)
९. शोकनाशन : समस्त अनुताप का ध्वंस (६३२)

छन्द संख्या – ६८ (नौ नाम)

१. अर्चिष्मान् : पूजा के योग्य (६३३)
२. अर्चित : पूजित (६३४)
३. कुम्भ : विशाल घट (६३५)
४. विशुद्धात्मा : पूर्णतः शुद्ध (६३६)
५. विशोधन : शुद्धीकरण (६३७)
६. अनिरुद्ध : अविराम (६३८)
७. अप्रतिरथ : निर्विरोध (६३९)
८. प्रद्युम्न : प्रचण्ड बल (६४०)
९. अमितविक्रम : अतुलनीय बल (६४१)

छन्द संख्या – ६९ (नौ नाम)

१. कालनेमिनिहा : अंधकार की स्थिति (मानसिक उन्माद और भ्रान्त धारणा) का विनाश (६४२)
२. वीर : विजय (६४३)
३. शौरि : विजय की चकाचौंध (६४४)
४. शूरजनेश्वर : शक्तिशाली प्राणियों की शक्ति (६४५)
५. त्रिलोकात्मा : तीनों लोकों का सार (६४६)
६. त्रिलोकेश : तीनों लोकों का नियामक (६४७)
७. केशव : रूपान्तरित करने वाले (६४८)
८. केशिहा : दंभ का ध्वंस (६४९)
९. हरि : आकांक्षाओं का हरण (६५०)

छन्द संख्या – ७० (दस नाम)

१. कामदेव : प्रेम–देवता (६५१)
२. कामपाल : प्रेम–पुष्टि (६५२)
३. कामी : प्रेम (६५३)
४. कान्त : प्रेम की शोभा (६५४)
५. कृतागम : प्रेम प्रकरण (६५५)
६. अनिर्देश्यवपु : जिसका कोई पता नहीं (६५६)
७. विष्णु : तथापि सर्वव्यापी (६५७)
८. वीर : प्रसारित ऊर्जा (६५८)
९. अनन्त : असीम रूप से (६५९)
१०. धनञ्जय : ऐश्वर्य और कुशल–क्षेम से भरपूर (६६०)

छन्द संख्या – ७१ (दस नाम)

१. ब्रह्मण्य : परम से सम्बन्धित (६६१)
२. ब्रह्मकृत् : परम घटनाक्रम को उत्पन्न करने वाले (६६२)
३. ब्रह्मा : परम (६६३)
४. ब्रह्म : परम प्रबोध (६६४)
५. ब्रह्मविवर्धन : परम बोध को उत्पन्न करने वाले (६६५)
६. ब्रह्मविद् : परम प्रबुद्ध (६६६)
७. ब्राह्मण : परम चैतन्य (अखण्ड) (६६७)
८. ब्रह्मी : परम का उत्कष (६६८)
९. ब्रह्मज्ञ : जीवन्त स्वरूप की पूर्णता (६६९)
१०. ब्राह्मणप्रिय : गुणातीत आनन्द (६७०)

छन्द संख्या – ७२ (आठ नाम)

१. महाक्रम : महान् अनुक्रम (६७१)
२. महाकर्मा : महान् कार्य सम्पादन (६७२)

३. महातेजा : महान् ऊर्जा (६७३)
४. महोरग : महान् सर्प (जिसे अनन्तनाग कहते हैं) (६७४)
५. महाक्रतु : कर्त्तव्य एवं दायित्व का महान् बोध (६७५)
६. महायज्वा : महान् आतिथेय (६७६)
७. महायज्ञ : महान् उत्सव (वैदिक) (६७७)
८. महाहवि : महान् दान (६७८)

छन्द संख्या – ७३ (ग्यारह नाम)

१. स्तव्य : आव्हान (६७९)
२. स्तवप्रिय : आव्हान का प्रेमी (६८०)
३. स्तोत्रः : मंत्रोच्चार (भक्ति संगीत) (६८१)
४. स्तुति : संगीत (६८२)
५. स्तोता : संगीत के रचयिता (६८३)
६. रणप्रिय : चुनौतियों का प्रेमी (महा साहसी) (६८४)
७. पूर्ण : अखण्ड (६८५)
८. पूरयिता : पूर्ति (६८६)
९. पुण्य : पावन (६८७)
१०. पुण्यकीर्ति : पवित्रता की निष्पत्ति (६८८)
११. अनामय : नीरोग (६८९)

छन्द संख्या – ७४ (नौ नाम)

१. मनोजव : विचार की गति (६९०)
२. तीर्थकर : तीर्थयात्री (६९१)
३. वसुरेता : प्रत्येक वस्तु का बीज (६९२)
४. वसुप्रद : प्रत्येक वस्तु प्रदान करने वाले (६९३)
५. वसुप्रद : प्रत्येक वस्तु जो दे चुका (६९४)
६. वासुदेव : प्रत्येक वस्तु में निवास करने वाले (६९५)
७. वसु : प्रत्येक वस्तु का आश्रय (विश्रामस्थल) (६९६)
८. वसुमना : मन का आश्रय ('निर्मन' में पिघलने हेतु) (६९७)
९. हवि : अनुदान (६९८)

छन्द संख्या – ७५ (नौ नाम)

१. सद्गति : शुभ परिणाम (६९९)
२. सत्कृति : शुभ कार्य (७००)
३. सत्ता : शुभ अस्तित्व (७०१)
४. सद्भूति : शुभ आविर्भाव (७०२)
५. सत्यपरायण : शुभ अनुकूलन (७०३)
६. शूरसेन : शक्तिसम्पन्न अवस्थिति (७०४)
७. यदुश्रेष्ठ : सर्वश्रेष्ठ गोपाल (७०५)
८. सन्निवास : भलाई में निवास करने वाले (७०६)
९. सुयामुन : यमुना तट के सर्वश्रेष्ठ निवासी (७०७)

छन्द संख्या – ७६ (नौ नाम)

१. भूतावास : सभी तत्वों में निवास करने वाले (७०८)
२. वासुदेव : उत्कृष्ट वासी (७०९)
३. सर्वासुनिलय : सबके लिए उत्तम वास स्थल (७१०)
४. अनल : तप्त ऊर्जा (७११)
५. दर्पहा : अहंकार का नाश करने वाले (७१२)
६. दर्पद : अभिमान प्रदान करने वाले (७१३)
७. दृप्त : गर्वी (७१४)
८. दुर्धर : प्रबन्धन से परे (७१५)
९. अपराजित : हर परिस्थिति में अजेय (७१६)

छन्द संख्या – ७७ (आठ नाम)

१. विश्वमूर्ति : ब्रह्माण्डीय रूप (७१७)
२. महामूर्ति : विराट रूप (७१८)

३. दीप्तमूर्ति : उज्ज्वलतम रूप (७१६)
४. अमूर्तिमान् : पूर्णतः अरूप (७२०)
५. अनेकमूर्ति : अनेक रूप (७२१)
६. अव्यक्त : अनिर्वचनीय (जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता) (७२२)
७. शतमूर्ति : सैकड़ों रूप (७२३)
८. शतानन : सैकड़ों मुख (७२४)

छन्द संख्या – ७८ (बारह नाम)

१. एक : एक (७२५)
२. नैक : एक नहीं (७२६)
३. सव : सभी (७२७)
४. क : कौन? (७२८)
५. किम् : क्या? (७२९)
६. यत् : यह! (७३०)
७. तत् : वह! (७३१)
८. पदमनुत्तम् : सर्वश्रेष्ठ पाद (नतमस्तक होने के लिए) (७३२)
९. लोकबन्धु : अस्तित्व का मित्र (७३३)
१०. लोकनाथ : अस्तित्व के स्वामी (७३४)
११. माधव : अत्यन्त मधुर! (७३५)
१२. भक्तवत्सल : भक्तों के प्रति अत्यन्त वात्सल्य (७३६)

छन्द संख्या – ७९ (दस नाम)

१. सुवर्णवर्ण : सोने की तरह जगमगाहट (७३७)
२. हेमाङ्ग : सोनाली अवयव (७३८)
३. वराङ्ग : सौन्दर्यपूर्ण अवयव (७३९)
४. चन्दनाङ्गदी : चन्दन जैसा अवयव (७४०)
५. वीरहा : धृता का नाश करने वाले (७४१)
६. विषम : असंगत (७४२)
७. शून्य : रिक्त (७४३)
८. घृताशी : तथापि संभावनाओं से परिपूर्ण (७४४)
९. अचल : स्थिति (७४५)
१०. चल : गति (७४६)

छन्द संख्या – ८० (दस नाम)

१. अमानी : आडम्बरहीन (७४७)
२. मानद : श्रद्धालु (७४८)
३. मान्य : आदरणीय (७४९)
४. लोकस्वामी : अस्तित्व का स्वामी (७५०)
५. त्रिलोकधृत् : तीन लोकों को धारण करने वाले (७५१)
६. सुमेधा : उत्तम मस्तिष्क (मनुष्यों के) (७५२)
७. मेधज : उत्तम मस्तिष्कों को उपलब्ध (७५३)
८. धन्य : ऐसे उत्तम मस्तिष्कों को जगाने में हर्ष (७५४)
९. सत्यमेधा : सद्गुण एवं सत्यनिष्ठा में लीन मस्तिष्क (७५५)
१०. धराधर : समस्त अवलम्बनों का अवलम्ब (७५६)

छन्द संख्या – ८१ (आठ नाम)

१. तेजोवृष : प्रबुद्ध सहनशक्ति (७५७)
२. द्युतिधर : प्रदीप्त प्रबोध (७५८)
३. सर्वशास्त्रभृतांवर : सम्पूर्ण शास्त्रों के सर्वोच्च धारक (७५९)
४. प्रग्रह : आसक्ति (७६०)
५. निग्रह : निरासक्ति (७६१)
६. व्यग्र : उत्सुकता (७६२)
७. नैकश्रृंग : एक सींग नहीं (संकेन्द्रण नहीं, बल्कि पूर्ण सचेतनता) (७६३)
८. गदाग्रज : गदा धारण करने वाले (७६४)

छन्द संख्या – ८२ (आठ नाम)

१. चतुर्मूर्ति : सतर्क प्रतीति (७६५)
२. चतुर्बाहु : सतर्क कार्य (७६६)
३. चतुर्व्यूह : सतर्क संगठन (७६७)
४. चतुर्गति : सतर्कगति (७६८)
५. चतुरात्मा : सतर्कता का सार (७६९)
६. चतुर्भाव : सतर्कता का भाव (७७०)
७. चतुर्वेदवित् : सतर्क ज्ञान और समझ (७७१)
८. एकपात् : मात्र सतर्कता (७७२)

छन्द संख्या – ८३ (नौ नाम)

१. समावर्त : सतत परिवर्तनशील (७७३)
२. अनिवृत्तात्मा : अपरिवर्तनशीलता का सार (७७४)
३. दुर्जय : अजेय (७७५)
४. दुरतिक्रम : अलंघ्य (७७६)
५. दुर्लभ : अप्राप्य (७७७)
६. दुर्गम : अगम्य (७७८)
७. दुर्ग : वस्तुतः दृढ़ीकरण (७७९)
८. दुरावास : दूर के निवासी (७८०)
९. दुरारिहा : तथापि सम्पूर्ण दूरियों को मिटाने वाले (७८१)

छन्द संख्या – ८४ (आठ नाम)

१. शुभाङ्ग : शुभ पहलू (७८२)
२. लोकसारङ्ग : अस्तित्व के सार के पहलू (७८३)
३. सुतन्तु : शरीर सौष्ठव (७८४)
४. तन्तुवर्धन : शरीरों का प्रजनन (७८५)
५. इन्द्रकर्मा : कम नियन्त्रक (७८६)
६. महाकर्मा : कम को बढ़ाने वाले (७८७)
७. कृतकर्मा : कम की निष्पत्ति (७८८)
८. कृतागम : कम की सम्पूर्ति (७८९)

छन्द संख्या – ८५ (दस नाम)

१. उद्भव : उत्तिष्ठित और जाग्रत (७९०)
२. सुन्दर : रमणीय (७९१)
३. सुन्द : दयालु (७९२)
४. रत्ननाभ : रत्न नाभि वाले (७९३)
५. सुलोचन : सुन्दर नेत्रों वाले (७९४)
६. अर्क : प्रदीप्ति (७९५)
७. वाजसन : भोजनवर्द्धक (७९६)
८. श्रृङ्गी : सींग धारण करने वाले (७९७)
९. जयन्त : विजेता (७९८)
१०. सर्वविज्जयी समस्त ज्ञान पर विजय (७९९)

सन्देश संख्या ६५ में क्रमशः –

वन्दे विष्णुं भव–भय–हरम्,
सर्वलोकैकनाथम् ।